

अनुसूचित जाति उपयोजना से सशक्तिकरण

एच.के. दे और **ए. साहा**

"भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद-केंद्रीय मीठाजल जीवपालन अनुसंधान संस्थान (भाकृअनुप-सीफा) ने वर्ष 2018-2024 के दौरान अनुसूचित जाति उपयोजना के तहत आठ राज्यों में जलकृषि, मुर्गीपालन, मशरूम खेती और पोषण-वाटिका जैसी गतिविधियों के माध्यम से 5000 से अधिक किसान परिवारों को सशक्त बनाया। लगभग 12,000 प्रतिभागियों को वैज्ञानिक जल कृषि तकनीकों पर प्रशिक्षण और जागरूकता कार्यक्रमों से लाभान्वित किया गया, जिसमें विशेष रूप से महिलाओं और स्वयं सहायता समूहों को संसाधन उपलब्ध करवाए गए। भूमिहीन और गरीबी रेखा से नीचे के लोगों के उत्थान हेतु, किसान ज्ञान हस्तांतरण को बढ़ावा देने के लिए फील्ड-स्कूल पद्धति का उपयोग किया गया।"

अनुसूचित जाति उपयोजना एक ऐसी परियोजना है जिसके माध्यम से अनुसूचित जाति के समुदायों को विशिष्ट वित्तीय एवं भौतिक लाभ प्रदान किया जाता है। अनुसूचित जाति के समुदायों के पारिवारिक और आर्थिक विकास को प्रोत्साहन देना इस परियोजना का मुख्य उद्देश्य है।

भाकृअनुप-सीफा का महत्वपूर्ण योगदान

भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद-केंद्रीय मीठा जलजीव पालन अनुसंधान संस्थान (सीफा), भुबनेश्वर ने इस क्षेत्र में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह किया है। अनुसूचित जाति उपयोजना ने भाकृअनुप-सीफा की तकनीकी सुधारों और उन्नत सामग्री वितरण के माध्यम से आठ राज्यों-आंध्र प्रदेश, तेलंगाना, पंजाब, राजस्थान, तमिलनाडु, कर्नाटक, पश्चिम बंगाल और ओडिशा में अनुसूचित जाति समुदायों को लाभ पहुंचाया है। वर्ष 2018-2024 के दौरान, भाकृअनुप-सीफा ने अनुसूचित जाति के किसान परिवारों की सामाजिक-आर्थिक स्थिति को सुधारने के लिए विभिन्न कार्यक्रम आयोजित किए, जो जलकृषि और उससे संबंधित गतिविधियों जैसे कि मुर्गीपालन, मशरूम खेती, मधुमक्खी पालन और पोषण वाटिका पर केंद्रित थे। इन



वैज्ञानिक परामर्श से कौशल विकास

भाकृअनुप-केन्द्रीय मीठाजल जीवपालन अनुसंधान संस्थान, कौशल्यागंगा, भुबनेश्वर-751002 (ओडिशा)



कौशल ज्ञान से मत्स्यपालकों का उत्थान

सारणी 1. अनुसूचित जाति उपयोजना के तहत क्षमता निर्माण कार्यक्रम और अन्य गतिविधियां

राज्य	जिले	कुल प्रतिभागी संख्या
आंध्र प्रदेश और तेलंगाना	बापतला, गुंटूर, कृष्णा, खम्मम, सूर्यपेट	1336
कर्नाटक और तमिलनाडु	चिकबल्लापुर, मैसूर, मधुरांथकम	477
ओडिशा	अंगुल, बालेश्वर, भद्रक, बौध, कटक, ढेंकानल, जगतसिंहपुर, जाजपुर, कंधमाल, केन्द्रापड़ा, केन्दुझर, खुर्दा, कोरापुट, मयूरभंज, पुरी, संबलपुर	6496
पंजाब	भटिंडा, फरीदकोट, मंसा, श्री मुक्तसर साहिब, बिकानेर, हनुमानगढ़	778
पश्चिम बंगाल	कूच बिहार II, दक्षिण दिनाजपुर, जलपाईगुड़ी, नदिआ, उत्तर 24 परगना, दक्षिण 24 परगना, उत्तर दिनाजपुर, मालदा	2294



किसानों को उन्नत सामग्री का वितरण

किसानों का सशक्तिकरण

अनुसूचित जाति उपयोजना का उद्देश्य यह सुनिश्चित करना है कि अनुसूचित जाति समुदायों को लक्षित वित्तीय और भौतिक सहायता प्राप्त हो। इस योजना का प्राथमिक लक्ष्य आवश्यक संसाधन उपलब्ध करवाकर और स्थानीय आर्थिक गतिविधियों तथा व्यवसायों के बीच अंतर को दूर करके, परिवार-आधारित आर्थिक विकास को प्रोत्साहित करना है। इस परियोजना के माध्यम से सामुदायिक और दूसरे अन्य तालाबों को मछलीपालन और बीज उत्पादन प्रदर्शन के लिए चयन किया गया। भूमिहीन महिलाओं और असहाय व्यक्तियों को मुर्गीपालन और पशुपालन संबंधित उपक्रम दिए गए, जिसमें प्रशिक्षण, भ्रमण और तकनीकी सहायताभी प्रदान की गई। कार्यशालाओं, तालाब स्थल प्रदर्शन और मीडिया प्रचार ने परिणामों को साझा करने और सफलता की कहानियों का प्रलेखन करने में मदद की।

सुधारों का उद्देश्य भूमिहीन और कमजोर आबादी, जिसमें गरीबी रेखा से नीचे रहने वाले लोग भी शामिल थे, को सशक्त कर उनका उत्थान करना था। भाकृअनुप-सीफा ने इन आठ राज्यों में लगभग 5000 किसान परिवारों तक पहुंच बनाई और लगभग 12000 प्रतिभागियों को लाभान्वित किया। भाकृअनुप-सीफा ने कई प्रशिक्षण और जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किए, जो चयनित राज्यों में वैज्ञानिक जलकृषि प्रथाओं और अन्य आजीविका-सुधार गतिविधियों पर केंद्रित थे। मुख्य पहलों में मछली पालन, सजावटी मछली पालन और लवण प्रभावित

सारणी 2. राज्य/जिलावार प्रौद्योगिकी प्रदर्शन

राज्य	मिश्रित मछली पालन	कार्प बीज पालन	सजावटी मछली पालन	पोल्ट्री, पशुपालन और बागवानी	कुल लाभार्थी
आंध्र प्रदेश और तेलंगाना	गुंटूर, कृष्णा, बापतला, सूर्यपेट, खम्मम		कृष्णा, बापतला		1664
पंजाब और राजस्थान	श्री मुक्तसर साहिब, भटिंडा, फरीदकोट, हनुमानगढ़	बिकानेर	मंसा		738
कर्नाटक और तमिलनाडु	मधुरांथकम, मैसूर, चिकबल्लापुर			मधुरांथकम, मैसूर	527
पश्चिम बंगाल	दक्षिण 24 परगना, उत्तर 24 परगना, नदियां		जलपाईगुड़ी	दक्षिण 24 परगना, कूच बिहार	1688
ओडिशा	पुरी, खोरद्धा, कंधमाल, ढेंकानल, केंद्रपाड़ा, कटक, बौध, कोरापुट, संबलपुर, भद्रक, बालासोर, अंगुल, मयूरभंज, जगतसिंहपुर, जाजपुर, केंदूझर	ढेंकानल		केंद्रपाड़ा	8042

क्षेत्रों में जलीय कृषि पर प्रशिक्षण कार्यक्रम शामिल थे। महिलाओं को शामिल करने के लिए विशेष प्रयास किए गए, जिसमें स्वयं सहायता समूहों को मशरूम शेड, ऑक्सीजन सिलेंडर और सजावटी मछली टैंक जैसे महत्वपूर्ण संसाधन प्रदान किए गए। इसके अतिरिक्त, किसान से किसान ज्ञान हस्तांतरण को प्रोत्साहित करने के लिए फील्ड-स्कूल के तरीके का उपयोग किया गया।

किसान मेलों, प्रदर्शनियों और वैज्ञानिक बैठकों जैसे प्रमुख कार्यक्रमों का आयोजन किया गया, जिसमें सरकारी विभागों, अनुसंधान संस्थानों और स्थानीय समुदायों की भागीदारी रही। इन पहलों ने अनुसूचित समुदायों को वैज्ञानिक कृषि पद्धतियों को अपनाने के लिये प्रोत्साहित किया, जिससे उनकी आजीविका और सामाजिक-आर्थिक स्थिति में सुधार हुआ। उत्तर बंगा कृषि विश्वविद्यालय पुंदिबाड़ी, रामकृष्ण मिशन विवेकानंद शैक्षिक एवं अनुसंधान संस्थान, बेलूर, कई कृषि विज्ञान केंद्रों, राज्य मछली पालन विभागों और अन्य भागीदारों के उल्लेखनीय सहयोग ने कार्यान्वयन प्रक्रिया को और अधिक मजबूत किया।

प्रशिक्षण और जागरूकता कार्यक्रम

आंध्र प्रदेश, तेलंगाना, पंजाब, राजस्थान, तमिलनाडु, कर्नाटक, पश्चिम बंगाल और ओडिशा में 11,381 किसानों और महिला किसानों की भागीदारी के साथ कुल 101 प्रशिक्षण-सह-जागरूकता कार्यक्रम, पांच कार्यशाला-सह-प्रदर्शनी कार्यक्रम और तीन भ्रमण आयोजित किये गए। इन कार्यक्रमों का उद्देश्य किसानों को वैज्ञानिक मछली पालन तकनीक, जलीय कृषि और संबंधित



जल कृषि में महिलाओं की अहम भूमिका

प्रथाओं के विभिन्न पहलुओं में शिक्षित और प्रशिक्षित करना था।

संसाधन सहायता कार्यक्रम

लगभग 250 संसाधन सहायता कार्यक्रम किये गये, जिसमें चूना, जाल, मछली आहार, मछली बीज, पानी के पंप, मशरूम शेल्टर, मुर्गी आहार, दवाएं, बत्तख और मुर्गी के चूजे, ऑक्सीजन टैंक, एफ.आर.पी हैचरी और बायो-फ्लॉक सेटअप जैसी आवश्यक संसाधन सामग्री 10,000 प्राप्तकर्ताओं को प्रदान की गई थी। अनुसूचित समुदाय किसानों को जलीय कृषि संचालन शुरू करने या सुधारने में सक्षम बनाना, इस सहायता का उद्देश्य था।

पानी और मृदा परीक्षण

जलीय पर्यावरण और मृदा स्वास्थ्य की गुणवत्ता सुनिश्चित करने के लिए 250 लाभार्थियों की उपस्थिति में पानी के नमूनों और मृदा का परीक्षण किया गया।

एक्वाकल्चर फील्ड स्कूल की स्थापना

एक्वाकल्चर फील्ड स्कूल एक गैर-आवासीय शैक्षिक संस्था है, जिसका उद्देश्य एक्वाकल्चर कृषि समुदाय की निर्णय लेने की क्षमता को बढ़ाना है। एक खोज-आधारित दृष्टिकोण के माध्यम से, मछली पालकों को इस भागीदारिता आधारित विस्तार रणनीति में उन एक्वाकल्चर उत्पादन तकनीकों को चयन करने का अवसर दिया जाता है, जिन्हें वे उपयोग में लाना चाहते हैं। वर्ष 2018-2024 के दौरान, कई जलीय कृषि सुविधाओं की स्थापना की गई: तमिलनाडु में दो एक्वाकल्चर फील्ड स्कूल, पश्चिम बंगाल में 6 एक्वाकल्चर फील्ड स्कूल, ओडिशा में एक एक्वाकल्चर फील्ड स्कूल, जो 1000 किसानों को ज्ञान प्रदान करता है।

मेला और प्रदर्शनियां

दो मछली पालन मेले, दो किसान मेले-सह-प्रदर्शनी और एक किसान गोष्ठी का आयोजन किया गया था, जिसमें 1090 लाभार्थियों ने भाग लिया। इन्होंने संभवत: जलीय कृषि में वैज्ञानिक तकनीकी के बारे में नवीनतम विकासों के बारे में जानने, अपने उत्पादों को प्रदर्शित करने और उद्योग में अन्य हितधारकों के साथ चर्चा करने का अवसर प्राप्त किया। ये गतिविधियां सामूहिक रूप से जलीय कृषि और संबंधित प्रयासों को बढ़ावा देने और समर्थन देने का एक संगठित प्रयास दर्शाती हैं। इसका उद्देश्य इस क्षेत्र में उत्पादकता, स्थिरता और आजीविका के अवसरों को बढ़ाना है। वर्ष 2018-2024 के दौरान लगभग 12,000 प्रतिभागियों ने इन कार्यक्रमों में भाग लिया और लाभ उठाया।

सारणी 3. भाकृअनुप-सीफा द्वारा एक्वाकल्चर फील्ड स्कूल की स्थापना

राज्य	जिला	स्थान	ऑपरेटर किसान का नाम	स्थापना वर्ष
ओडिशा	कटक	कोचिला न्यूआगांव, दासा साहि	श्री राजेश रंजन महापात्रा	2020
पश्चिम बंगाल	दक्षिण 24 परगना	सोनारपुर	श्रीमती सुनीति मंडल	2021
पश्चिम बंगाल	जलपाईगुड़ी	मलकानिहाट	श्री भागीरथी राय	2021
पश्चिम बंगाल	कूचबिहार	चाट एलाजन	श्री संजय किर्तनिया	2021
पश्चिम बंगाल	उत्तर दिनाजपुर	फतेहपुर	स्क. स्कीकुल आलम	2021
पश्चिम बंगाल	दक्षिण दिनाजपुर	दुमुथा फरिदपुर	श्री बिप्लब चंद्र राय	2021
पश्चिम बंगाल	दक्षिण 24 परगना	गोरणबोसे	श्रीमती मामोनी कर्मकार	2021
तमिलनाडु	मदुरै	कांचरामपेट्टई	श्री विजयकुमार	2022
तमिलनाडु	कडलूर	सेथियाथोपे	श्री पुगजेन्दी	2022